Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कलात्मक अभिव्यक्ति एवं कोविड-19 संकट: राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ द्वारा प्रदान किए गए मंच का मूल्यांकन

शिवांशु गिरि* डॉ. राजकिशोरी सिंह**

* रिसर्च स्कॉलर (ड्राइंग एवं पेंटिंग) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.) भारत
** प्रोफेसर (ड्राइंग एवं पेंटिंग) ए.एन.डी.एन.एन.एम. महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – कोविड-19 महामारी के बाद संपूर्ण विश्व पर सांस्कृतिक और कलात्मक गतिविधि को काफी प्रभावित करने वाले परिणाम सामने आए हैं। सामान्य जीवन में कई प्रतिबंध होने के पश्चात गैलरी बंद होने और प्रदर्शनियों के रद्द होने से कलाकारों की आजीविका और उनकी रचना करने की प्रक्रियाएं बाधित हुई। भारत में इस कठिन दौर में कलात्मक गतिविधियों को जारी रखने के लिए सांस्कृतिक संस्थाओं ने कई रूपों में भूमिका निभाई। यह शोध पत्र कोविड-19 संकट के दौरान कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने वाले तथा समर्थन देने वाले लखनऊ स्थित राज्य ललित कला अकादमी की भूमिका का मूल्यांकन करता है।

अध्ययन में यह पता लगाया गया है, कि अकादमी में प्रदर्शनियां कार्यशालाओं छात्रवृत्तियों और महामारी के बाद की पहलुओं के लिए किस प्रकार अवसर दिए गए। जिससे कलाकारों के द्वारा सामना की गयी चुनौतियों का भी विश्लेषण करता है, औरसंकट के समय में सांस्कृतिक निरंतर को बनाए रखने के लिए संस्थागत मंचों के महत्व पर प्रकाश डालता है।

प्रस्तावना – कला ने ऐतिहासिक रूप से संकट के समय पर मानवीय अनुभवों को प्रदर्शित करने के माध्यम के रूप में कार्य किया। महामारी, युद्ध और सामाजिक उथल-पुथल में अक्सर कलाकारों को अपने परिवेश पर रचनात्मक प्रक्रियाएं देने के लिए प्रेरित किया जाता है। 2020 में कोविड-19 के प्रकोप में विश्व स्तर पर व्यवधान उत्पन्न किया स जिससे न केवल स्वास्थ्य सेवाएं बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों पर भी प्रभाव पड़ा।

लॉकडाउन प्रतिबंध के कारण संग्रहालय कलादिर गांव और सांस्कृतिक केदो को बंद करने से कला क्षेत्र को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कलाकारों को अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शित करने और दर्शकों से जुड़ने के सीमित अवसर मिले तथा प्रदर्शनी और कल मंचों या मेलो को रद्द होने से कई कलाकारों को आर्थिक सुरक्षा का भी सामना करना पड़ा।

भारत में इस दौरान कलाकारों को सहयोग देने के लिए सरकारी संस्थाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ऐसा ही एक संस्थान उत्तार प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में दृश्य कला को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया जिसे हम राज्य ललित कला अकादमी के रूप में जानते हैं।

लखनऊ में स्थित यह अकादमी उभरते और स्थापित कलाकारों को सहयोग देने के लिए प्रदर्शनी और कल से वीरों एवं कला शालाओं और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों का आयोजन करती है।

यह शोध पत्र इस बात की पड़ताल करता है, कि महामारी जैसी समय अवधि के दौरान अकादमी ने कलात्मक अभिव्यक्ति के मंच के रूप में कैसे कार्य किया और क्षेत्रीय कल समुदाय को बनाए रखने में इसकी भूमिका का मूल्यांकन करता है।

अध्ययन के उद्देश्य– इस अध्ययन का उद्देश्य निम्न लक्षण को प्राप्त करना है:

1. कोविड-19 माहवारी के कलाकारों और कल संस्थानों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. महामारी के दौरान राज्य ललित कला अकादमी द्वारा की गई पहलों की जांच करना।
3. कलात्मक अभिव्यक्त के अवसर प्रदान करने में अकादमी की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. संकट के समय कलाकारों के लिए संस्थागत समर्थन के महत्व को समझाना तथा साथ ही साथ विपरीत परिस्थितियों में किस तरह कलाकारों का सहयोग किया जाता है, इन महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना।

साहित्य समीक्षा

पिछले शोधों में कला और सामाजिक संकटों के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध पर प्रकाश डाले गए हैं। कल इतिहासकारों ने पाया है कि कलाकार अक्सर कठिन ऐतिहासिक क्षणों पर सशक्त दृश्य प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रक्रियाएं प्रदर्शित करते हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान विद्धानों ने कलात्मक गतिविधियों को बनाए रखने में डिजिटल प्लेटफॉर्म और सांस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका पर जोर दिया। कई संग्रहालय और कार्यशालाओंने ऑनलाइन प्रदर्शनियां और वर्चुअल टूर और डिजिटल कार्यशालाओं का भी रुख किया।

भारत में ललित कला अकादमी राष्ट्रीय कला अकादमी और राज्य ललित कला अकादमी जैसे संस्थानों ने कलाकारों को सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संगठनों ने प्रदर्शनियों का आयोजन किया और कलाकारों को अपना रचनात्मक कार्य जारी रखने के लिए प्रोत्साहित

किया साथ ही साथ उन्हें आर्थिक मदद भी दी।

सांस्कृतिक लचीलेपनपर किए गए अध्ययनों से पता चलता है, कि संस्थान कलाकारों और दर्शकों के बीच एक सेतु का काम करते हैं स खासकर ऐसे समय पर जब पारंपरिक प्रदर्शनी स्थल उपलब्ध नहीं होते हैं , तब राज्य ललित कला अकादमी की गतिविधियां यह दर्शाती हैं, कि क्षेत्रीय सांस्कृतिक संस्थान कलात्मक समुदायों को बनाए रखने और उनके उन्नति में किस प्रकार योगदान देते हैं।

कार्य प्रणाली– यह शोध गुणात्मक और वर्णनात्मक विश्लेषण पर आधारित हैस

डाटा के स्रोत– अध्ययन का उपयोग करते हैं–

1. द्धितीयक स्रोत जैसे की पुस्तक लेख और समाचार पत्र।
2. राज ललित कला अकादमी की आधिकारिक वेबसाइट से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
3. प्रदर्शनियों कला शिविरों और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों की रिपोर्ट के अनुसार।

अनुसंधान दृष्टिकोण– यह शोध संस्थागत पहलों का मूल्यांकन करता है। और क्षेत्र के कलाकारों पर उनके प्रभाव की जांच करता है।

कोविड–19 महामारी का कला समुदाय पर प्रभाव– कोविड–19 महामारी ने कला जगत में भारी व्यवधान और विपरीत परिस्थितियों उत्पन्न करी है।

कला संस्थाओं का बंद होना– लॉकडाउन के दौरान संस्थान और कला संग्रहालय गैलरी और सांस्कृतिक केंद्र लंबे समय तक बंद रहे इसके परिणाम स्वरुप प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को रद्द करना पड़ा।

आर्थिक चुनौतियां– कलाकार अपनी आजीविका के लिए प्रदर्शनियों कमीशन और कल विकि पर निर्भर करते हैं। कल आयोजनों के रद्द हो जाने के कारण उनके आई के अवसर कम हो गए जिससे उन्हें आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

मनोवैज्ञानिक और रचनात्मक प्रभाव– एक लंबे समय के अलगाव और अनिश्चित से कलाकारों को भावनात्मक रूप से भी प्रभावित किया हालांकि यह अनुभव कलात्मक अभिव्यक्त के विषय भी बने। कई कलाकृतियां में अलगाव चिंता आशा और लचीलेपन की भावनाएं भी प्रदर्शित की गई। इससे न सिर्फ मनोवैज्ञानिक बाल की रचनात्मक प्रभाव भी देखने को मिले।

लखनऊ स्थित राज्य ललित कला अकादमी की भूमिका–लखनऊ उत्तर प्रदेश में दृश्य कला को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार के द्धारा ललित कला अकादमी नेक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महामारी के दौरान और उसके बाद भी संस्था ने कई पहलों के माध्यम से कलाकारों को सहयोग देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कला प्रदर्शनियां– अकादमी नियमित रूप से चित्रकला और मूर्तिकला एवं ग्राफिक कलाकृतियों की प्रदर्शनियों का आयोजन करती है। यह प्रदर्शनियां कलाकारों को जनता के सामने अपनी कलाकृतियों के प्रस्तुत करने और पहचान को बनाने एवं उन्हें मंच प्रदान करने का कार्य करती हैं। महामारी के बाद आयोजित कलाकृतियां एवं प्रदर्शनियों ने सांस्कृतिक गतिविधियों को पुन: जीवित कर दिया एवं पुनर्जीवित करने में मदद की और कलाकारों को दर्शकों को पुन: जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

छात्रवृत्तियां और वित्तीय सहायता– अकादमी युवा कलाकारों के कलात्मक विषय और विकास में सहयोग देने के लिए आर्थिक छात्रवृतियां भी प्रदान करती है आर्थिक संकट के समय में यह कार्यक्रम विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। जब कलाकारों को अपना काम जारी रखने में कठिनाइयां होती हैं तब वह अकादमी का सहयोग प्राप्त कर सकते हैं इस प्रकार की पहल उभरते कलाकारों को वृत्तीय चुनौतियों के बावजूद अपने रचनात्मक कार्य जारी रखने में मदद करती हैं।

कार्यशालाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम– यह अकादमी छात्रों और युवा कलाकारों के लिए कार्यशालाएं और शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन भी करती है इन कार्यक्रमों का उद्देश्य कौशल विकास और कलात्मक प्रयोग करना होता है। कार्यशालाएं अनुभवी कलाकारों और छात्रों के बीच संवाद को भी प्रोत्साहित करती हैं जिससे मार्गदर्शन और सीखने के अवसर पैदा होते हैं।

कला शिविर और सामुदायिक सहभागिता – अकादमी द्धारा आयोजित कल सेवरल कलाकारों को सहयोग करने और विचारों का आदान–प्रदान करने का अवसर प्रदान करते हैं यह गतिविधियां कल समुदाय को सशक्त बनाती हैं और रचनात्मक संवाद को प्रोत्साहित करती हैं।

महामारी के दौरान कलात्मक विषय– महामारी ने कलात्मक विषयों को कई तरह से प्रभावित किया कलाकारों ने निम्नलिखित विषयों पर अपना कल का प्रदर्शन किया–

1. अलगाव और अकेलापन।
2. सामाजिक दूरी और मास्क।
3. स्वास्थ्य कर्मी और अग्रिम पंक्ति के नायक।
4. मानव लचीलापन और आशा।

चित्र, मूर्तियां और डिजिटल कला के माध्यम से कलाकारों ने महामारी की सामाजिक और भावनात्मक वास्तविकता को लिपिबद्ध किया।

प्लेटफार्म का मूल्यांकन– राज्य ललित कला अकादमी द्धारा उपलब्ध कराए गए मंच का मूल्यांकन कई कारकों के आधार पर किया जा सकता है–

कलाकारों के लिए अवसर– यह अकादमी कलाकारों को प्रदर्शनी स्थल और मान्यता प्रदान करती है युवा कलाकारों को तथा युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन प्रदान करती है। साथ ही साथ यह अकादमी छात्रवृतियां और कार्यशालाओं के माध्यम से युवा कलाकारों को अपने कौशल विकास करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

सांस्कृतिक संरक्षण– प्रदर्शनियों और कल कार्यक्रम का आयोजन करके अकादमी क्षेत्रीय कलात्मक परंपराओं को संरक्षित और बढ़ावा देने में मदद करती है।

चुनौतियां– अपनी उपलब्धियां के बावजूद कुछ चुनौतियां अभी भी बनी हुई है–

1. ऑनलाइन प्रदर्शनियों के लिए सीमित डिजिटल अवसंरचना।
2. अधिक धन और व्यापक पहुंच की आवश्यकता है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के कलाकारों के लिए अवसरों का विस्तार करना आवश्यक है।

चर्चा– महामारी ने कलात्मक गतिविधियों को बनाए रखने के लिए सांस्कृतिक संसाधनों और संस्थाओं के महत्व को उजागर किया। राज ललित कला अकादमी जैसे संस्थान कलाकारों के लिए आवश्यक सहायता प्रणाली के रूप में कार्य करते हुए नजर आए स साथ ही साथ अकादमी की पहल यह दर्शाती है , कि कैसे स्थानीय संस्थान कठिन समय में भी रचनात्मक समुदायों को सहारा दे सकते हैं। न सिर्फ आर्थिक बल्कि सामाजिक और मानसिक संतुष्टि के लिए यह संस्थान गरिमापूर्ण में रूप में कार्य करते हैं। प्रदर्शनी के अवसर वित्तीय सहायता और शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करके अकादमी

उत्तर प्रदेश में दृश्य कलाओं के विषय में योगदान देती है।

निष्कर्ष– कोविड–19 महामारी में वैश्विक कल समुदाय के सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियां खड़ी कीं। कलाकारों को आर्थिक कठिनाइयां सीमित प्रदर्शनियों और सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ा। हालांकि इस संकट ने कलात्मक अभिव्यक्ति के नए रूपों को भी प्रेरित किया। इस दौरान लखनऊ स्थित राज्य ललित कला अकादमी ने कलाकारों को सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रदर्शनियों छात्रवृत्तियों कार्यशालाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अकादमी ने कलात्मक गतिविधियों को बनाए रखने में मदद की और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान किया।

यह अध्ययन संकट के समय में भी कल के फलने फूलने को सुनिश्चित करने के लिए सांस्कृतिक संस्थाओं की मजबूत करने और डिजिटल प्लेटफॉर्मों का विस्तार करने के लिए प्रेरित करता है तथा इसके महत्व पर प्रकाश डालता है। यह अति आवश्यक हो जाता है कि स्थानीय कला संस्थाओं के पुनरुत्थान तथा उन्हें डिजिटल युग में आर्थिक वैश्विक, सामाजिक रूप से स्थापित किया जाए, बल्कि आर्थिक तौर पर मजबूती दी जाए।

इस शोध के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं।

1. राज्य ललित कला अकादमी जैसी संस्कृत संस्थाएं संकट के समय कलात्मक समुदायों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
2. अकादमी द्वारा आयोजित प्रदर्शनियां और कार्यशालाएं कलाकारों को अपना काम प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती हैं न सिर्फ मानसिक बल्कि आर्थिक रूप से भी मजबूती प्रदान करते हैं।
3. संस्थागत सहयोग से युवा कलाकारों को पहचान और पेशेवर अनुभव प्राप्त करने में मदद मिलती है।
4. महामारी ने डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन कल प्रचार की आवश्यकता को तेज कर दिया है।

राज्य ललित कला अकादमी में आयोजित प्रदर्शनियों की केस स्टडी–

स्थापना दिवस कला प्रदर्शनी– राज्य ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित कलात्मक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण लखनऊ में आयोजित 65 वां स्थापना दिवस समारोह था। इस कार्यक्रम में चित्रकला प्रदर्शनियां प्रतियोगिताएं और वाराणसी इलाहाबाद कानपुर जैसे विभिन्न शहरों के छात्रों और कलाकारों द्वारा निर्मित कलाकृतियों के स्टॉल शामिल किए गए। आगंतुक भित्ति चित्र अमूर्त चित्रकला और टेराकोटा वस्तुओं एवं मंडला कला और चित्र सहित कलाकृतियों को देखा और खरीद सकते थे।

बलेनूर फातिमा और अनुष्का सनी जैसे कलाकारों ने आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक पहचान जैसे विषयों पर आधारित कलस प्रदर्शनियां प्रदर्शित की। इस काल क्रम में जाने–माने कलाकार वासुदेव कामत ने भी लाइव प्रदर्शन किया जिन्होंने युवा कलाकारों को डिजिटल संदर्भ पर निर्भर रहने की बजाय वास्तविक जीवन का अवलोकन करने और अपनी स्वयं की दृश्य भाषा विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस दौरान प्रदर्शनियां यह दर्शाती हैं, की कलाकारों को अपनी कृतियों को प्रदर्शित करने और बेचने के अवसर कैसे प्रदान करती है। जो महामारी के कारण उत्पन्न व्यवधान के बाद विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी– इसका एक और उदाहरण स्टेट ललित कला अकादमी में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी है। इस प्रदर्शनी में 23 देश के 79 फोटोग्राफरों की कलाकृतियां प्रदर्शित की गई जिसमें से चुनिंदा तस्वीरों का मूल्यांकन अंतरराष्ट्रीय दूरी द्वारा किया गया था।

इस आयोजन ने अकादमी की भूमिका को एक ऐसे मंच के रूप में प्रदर्शित किया जो स्थानीय कलाकारों को वैश्विक कलात्मक नेटवर्क से जोड़ता है। अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन करके यह संस्था सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करती है और क्षेत्रीय कलाकारों को प्रेरित करती है।

श्रद्धांजलि प्रदर्शनी– 'कला आचार्य'

अकादमी ने प्रभावशाली कल शिक्षकों और कलाकारों को सम्मानित करने के लिए कल आचार्य शीर्षक से एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया। इस प्रदर्शनी में अकादमी के संग्रह से 72 चित्र शामिल थे जिसमें सुधीर रंजन खस्तगीर , असित कुमार हलदर और बनार जैसे प्रमुख कलाकारों की कृतियां सम्मिलित थीं।

इन कलाकृतियों ने भू दृश्य ग्राफिक कृतियां और तेल एवं जल तकनीक से निर्मित समकालीन चित्र शामिल थे ऐसे प्रदर्शनिया भारत की कलात्मक विरासत को संरक्षित करने में अकादमी की भूमिका को उजागर करती हैं और साथ ही कलाकारों की युवा पीढ़ी को प्रेरित भी करती हैं।

कलाकारों के लिए सहायता प्रणाली

पुरस्कार और मान्यता– यह अकादमी नियमित रूप से दृश्य कला के उत्कृष्ट प्राप्त कलाकारों को पुरस्कार देती है और उदाहरण के लिए अपनी स्थापना दिवस समारोह के दौरान राज्य और क्षेत्रीय कलप प्रदर्शनियों में अपने कार्यों के लिए 37 कलाकारों को पुरस्कार और आर्थिक सहायता प्रदान की थी।

यह पुरस्कार कलाकारों को रचनात्मक कार्य के लिए प्रेरित करते हैं और रचनात्मक कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं।

कार्यशालाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम– अकादमी के द्वारा आयोजित कार्यशालाएं कलाकारों को नई तकनीकी सीखने और अनेक कलात्मक शैलियों का अन्वेषण करने में मदद करती हैं। इन कार्यशालामें अक्सर विश्वविद्यालय और कल संस्थाओं के साथ सहयोग शामिल होता है जिससे छात्रों को पेशेवर कलाकार के साथ संवाद करने में अवसर मिलते हैं।

कलाकारीऔरआर्थिक लाभ– अकादमी अपनी दीर्घा में कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगती है तथा कलाकारों को आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है जिसमें कलाकारों की कार्यशालाओं के दौरान बनाई गई लगभग 2000 पेंटिंग का संग्रह अकादमी द्वारा संरक्षित है। और व्यापक दशकों तक पहुंचाने के लिए बिक्री को फिर से शुरू करने और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विकसित करने के भी प्रयास किया जा रहे हैं। यह पहला कल करो को आर्थिक सहायता प्रदान करती है और दृश्य कलाओं के प्रति जनता में सहभागिता बढ़ती है।

सिफारिशें:

1. वर्चुअल प्रदर्शनी और ऑनलाइन गैलरी का विकास करना।
2. उभरते कलाकारों के लिए वृत्ति अनुदान और छत्रपतियों में वृद्धि करना।
3. विश्वविद्यालय और कल संस्थाओं के साथ सहयोग का विस्तार करना।
4. कल कार्यक्रम में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

भविष्य में अपनी भूमिका को मजबूत करने के लिए अकादमी निम्न रणनीतियां पर अपना कार्य कर सकती है। ऐसे उपाय संस्थान को बदलते डिजिटल और सांस्कृतिक परिदृश्य में प्रासंगिक बने रहने में मदद करेंगे।

रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान करके अकादमी ने

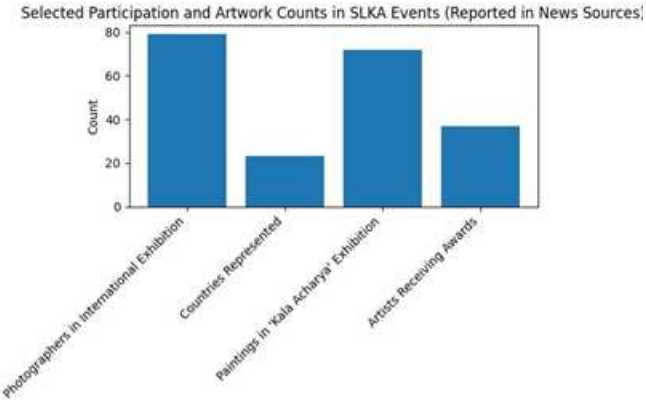
महामारी के दौरान और उसके बाद संस्कृत निरंतर को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया और संस्था उत्तार प्रदेश में दृश्य कलाओं के लिए महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में अपनी भूमिका निभा रही है प्रतिभाओं का पोषण कर रही है और समुदाय के भीतर कलात्मक संवाद को बुढ़ापा दे रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

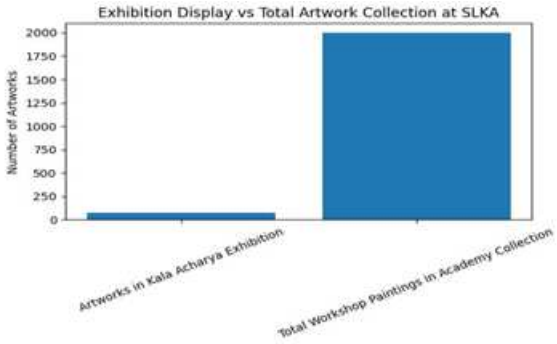
1. राजा ललित कला अकादमी की आधिकारिक वेबसाइट।
2. लखनऊ में हिंदुस्तान टाइम्स की कला प्रदर्शनियां।
3. टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा लखनऊ में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रदर्शनियां।
4. कोविड-19 के दौरान कला और सांस्कृतिक संस्थानों पर शोध लेख।
5. समकालीन भारतीय कला और संस्थागत सहायता प्रणालियों पर अध्ययन।
6. चित्र 1. लखनऊ के कैसरबाग स्थित लाल बारादरी में राज्य ललित कला अकादमी की इमारत, राज ललित कला अकादमी का प्रदर्शनी हाल , लखनऊ शहर में स्थित स्टेट ललित कला अकादमी में प्रदर्शनी गैलरी का स्थान जहां कलाकार सार्वजनिक प्रदर्शनियों के दौरान चित्रकला मूर्ति कला और ग्राफिक कलाकृतियों को प्रदर्शित करते हैं।
7. ग्राफ अनुभव , राज्य ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित गतिविधियां कलात्मक सहभागिता के महत्वपूर्ण स्तर को दर्शाती हैं एवं अकादमी द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों और कलात्मक कार्यक्रमों में प्राप्त संख्यात्मक आंकड़ों को प्रस्तुत करती हैं। यह आंकड़े भागीदारी की विविधता को दर्शाते हैं, जिसमें अंतरराष्ट्रीय फोटोग्राफर प्रदर्शनी कलाकृतियां की विशाल संख्या और पुरस्कारों के माध्यम से कलाकारों को दी गई मान्यता शामिल है।



(चित्रसंख्या 1.राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ कैसरबाग लाल बारादरी)



(चित्रसंख्या- 2, SLKA प्रोग्राम में उपस्थित कलाकृतियां की संख्या एवं वैश्विक कलाकारों की सहभागिता काअनुपात)



(चित्रसंख्या 3, कलाकार दीर्घाओंऔर कलाकृतियों की संख्या अनुपात)

****